IIJ Impact Factor : 3.119 ISSN : 2395 - 5104

शब्दार्णव Shabdarnav

International Peer Reviewed Referred Journal of Multidisciplinary Research

Year 6 Vol. 11, Part-I January-June, 2020

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI

Executive Editors
DR. KUMAR MRITUNJAY RAKESH
MR. RAGHWENDRA PANDEY

Published by
SAMNVAY FOUNDATION
Mujaffarpur, Bihar

- भारत में महिलाओं की दशा-दिशा का सामाजिक पाठ — 145–146
  सत्येन्द्र कुमार पाण्डेय
- भुवनेश्वर के नाट्य साहित्य में ज्वलंत समस्या — 147–150
  शशि शेखर
- मुगल शासकों की दक्षिण नीति — 151–154
  बिनोद कुमार महतो
- राष्ट्रीय आंदोलन में सेठ जमनालाल बजाज का वित्तीय योगदान — 155–157
  रामसिंह सामोता
- सिद्धान्त-तत्त्वविवेककारस्य गोलभूषण कमलाकरभट्टस्य मध्यमाधिकारे वैशिष्ट्यम् — 158–162
  तरुण कुमार झा
- पातञ्जले ईश्वरचिन्तनम् — 163–170
  Dhrubajyoti Bhattacharjee
- मुखं व्याकरण स्मृतम् — 171–174
  दीपककुमार
- अभिज्ञानशाकुन्तले गुणकथनविमर्शः — 175–178
  डॉ० अरविन्दकुमार
- संस्कृतसाहित्ये गीतिकाव्यस्योत्पत्तिः विकासः च — 179–181
  डॉ० अर्चना कुमारी
- साहित्यशास्त्रे रसस्वरूपम् — 182–185
  डॉ० देवनारायण झा
- सम्राट कनिष्क का राजनैतिक विरासत और सद्धर्म का प्रचार — 186–190
  डॉ० दीपेन कुमार राय
- महर्षि दयानन्द सरस्वती की वैदिक लेखन में प्रवृत्ति का कारण — 191–193
  डॉ० अजीत कुमार
- व्यवहार अभियोग के क्षेत्र में नारी की भूमिका — 194–196
  डॉ० कल्पना कुमारी
- बिहार में विपरीत प्रव्रजन एवं उसके आर्थिक और सामाजिक आयाम (मनरेगा के विशेष सन्दर्भ में) — 197–202
  डॉ० कमलेश कुमार
- मध्ययुगीन समाज में शिक्षा — 203–207
  डॉ० काशीनाथ सिंह
- वज्रयानी साधना में पंचतथागत — 208–212
  डॉ० मालती सिन्हा
- भारतीयसंस्कृतौ मनस्तत्त्वविवेचनम् — 213–216
  डॉ० मनीषकुमारपाण्डेय
- काव्यदोषाः — 217–220
  डॉ० मनमोहन तिवारी
- तिब्बत का प्राचीन धर्म बोन — 221–225
  डॉ० रविकान्त कुमार

अभिज्ञानशाकुन्तले मृगयावर्णनविमर्शः

डॉ. अरविन्दकुमारः*

अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नाटके मृगयावर्णनं महत्त्वपूर्णं स्थानं [illegible] प्रतिभाति। महाकवेः [illegible] अभिज्ञाने [illegible] नाटकवर्णनमुत्कृष्टं वर्तते। तद्यथा-

नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः।

[illegible]।

आश्रमस्य आनुरूप्यं मृगया वर्णिता। यथा

विदूषकः कथयति – भो कष्टम्, एतस्य मृगयाशीलस्य राज्ञो वयस्यभावेन निर्विण्णोऽस्मि। अयं मृगोऽयं वराहोऽयं शार्दूल इति मध्याह्नेऽपि ग्रीष्मविरलपादपच्छायासु वनराजिष्वाहिण्ड्यतेऽटवीतोऽटवी। पत्रसंकरकषायाणि कटूनि गिरिनदीजलानि पीयन्ते। अनियतवेलं शूल्यमांसभूयिष्ठ आहारो भुज्यते। तुरगानुधावनकण्डितसन्धेः रात्रावपि निकामं शयितव्यं नास्ति। ततो महत्येव प्रत्यूषे दास्याः पुत्रैः शकुनिलुब्धैर्वनग्रहणकोलाहलेन प्रतिबोधितोऽस्मि। इयतेदानीमपि पीडा न निष्क्रामति। विरलमेवंरूपं विशदम्भावं मृगयावर्णनम्। अत्रापीदं वक्तुं शक्यते यदिदं नाट्याङ्गमपि विशुद्धकाव्यत्वानुरञ्जनम्। एष बाणासनहस्ताभिर्यवनीभिर्वनपुष्पमालाधारिणीभिः परिवृत इत एवागच्छति प्रियवयस्यः।

राज्ञो मृगयां प्रति निरुत्सुकं चेतो वर्णितम्। यथा हि-

न नमयितुमधिज्यमस्मि शक्तो धनुरिदमाहितसायकं मृगेषु।

सहवसतिमुपेत्य यैः प्रियायाः कृत इव मुग्धविलोकितोपदेशः॥

विदूषकः सेनापतिं प्रति उक्तवान् त्वं तावदटवीतोऽटवीमाहिण्डमानो नरनासिकालोलुपस्य जीर्णऋक्षस्य कस्यापि मुखे पतिष्यसि।

राजा - गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृङ्गैर्मुहुस्ताडितं

छायाबद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु।

विस्रब्धं क्रियतां वराहततिभिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले

विश्रामं लभतामिदं च शिथिलज्याबन्धमस्मद्धनुः॥

दुष्यन्त विषये ऋषिकुमारः कथयति – अहो दीप्तिमतोऽपि विश्वसनीयतास्य वपुषः। अथवोपपन्नमेतद् ऋषिकल्पे राजनि। कुतः

अध्याक्रान्ता वसतिरमुनाप्याश्रमे सर्वभोग्ये

रक्षायोगादयमपि तपः प्रत्यहं संचिनोति।

अस्यापि द्यां स्पृशति वशिनश्चारणद्वन्द्वगीतः

पुण्यः शब्दो मुनिरिति मुहुः केवलं राजपूर्वः॥

द्वितीय ऋषिकुमारः कथयति -

नैतच्चित्रं यदयमुदधिश्यामसीमां धरित्रीमेकः

कृत्स्नां नगरपरिघप्रांशुबाहुर्भुनक्ति।

आशंसन्ते समितिषु सुरा बद्धवैरा हि दैत्यैरस्या

धिज्ये धनुषि विजयं पौरुहूते च वज्रे॥

* [illegible]

अभिज्ञानशाकुन्तलस्य तृतीयाङ्के नायकयोः सम्भोगोपक्रमो वर्णितः। तद्यथा राजा शकुन्तलां प्र[illegible] वदति

किं शीतलैः क्लमविनोदिभिरार्द्रवातान् सञ्चारयामि नलिनीदलतालवृन्तैः।
अङ्के निधाय करभोरु यथासुखं ते संवाहयामि चरणावुत पद्मताम्रौ॥
अपरिक्षतकोमलस्य यावत् कुसुमस्येव नवस्य षट्पदेन।
अधरस्य पिपासता मया ते सदयं सुन्दरि गृह्यते रसोऽस्य॥

राज्ञः सम्भोगविषय एकाकीकांक्षते -

मुहुरङ्गुलिसंवृताधरोष्ठं प्रतिषेधाक्षरविक्लवाभिरामम्।
मुखमंसविवर्ति पक्ष्मलाक्ष्याः कथमप्युन्नमितं न चुम्बितं तु॥

विप्रलम्भः पुनः निर्वर्णयति तपोवनं शकुन्तलायाः प्रस्थानकाले। तद्यथा-

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः॥

शकुन्तला वनज्योत्स्नां स्मरति वनज्योत्स्ने, चूतसंगताऽपि मां प्रत्यालिंग इतो गताभिः शाखाबाहुभिः। काश्यपः समर्थयति। चूतेन संश्रितवती नवमालिकेयमस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः॥

गर्भमन्थराशकुन्तला मृगवधूं प्रति समुत्सुका स्वाभाविकी वर्तते प्रस्थानकाले। सा पितरं काश्यपं निवेदयति - तात, एषा उटजपर्यन्तचारिणी गर्भमन्थरा मृगवधूः यदानघप्रसवा भवति तदा मह्यं कमपि प्रियनिवेदयितृकं विसर्जयिष्यथ। शकुन्तलायाः निवसनं आसक्तो मृगशावः कण्वेन निर्वर्णितः -

यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।
श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते॥

शार्ङ्गरवोऽपि नगरं प्रशंसति -

महाभाग: कामं नरपतिरभिन्नस्थितिरसौ न कश्चिद् वर्णानामपथमपकृष्टोऽपि भजते।
तथापीदं शश्वत्परिचितविविक्तेन मनसा जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव॥

राजापि वशिनामादर्शमुपस्थापयति -

कुमुदान्येव शशाङ्कः सविता बोधयति पङ्कजान्येव वशिनां हि परपरिग्रहसंश्लेषपराङ्मुखी वृत्तिः।

चित्रदर्शनं तु प्रणयिनां विनोदस्थानमेव राजा शकुन्तलां चित्रे स्वीयं भावचित्रं निर्वर्णयति तद्यथा

स्विन्नाङ्गुलिविनिवेशो रेखाप्रान्तेषु दृश्यते मलिनः।
अश्रु च कपोलपतितं दृश्यमिदं वर्तिकोच्छ्वासात्॥

चित्रे मधुकर-व्यसनमपि न विस्मृतम्। चित्रदर्शनप्रसङ्गेन रमणीयं वर्णनं मधुकरस्य दण्डविधानस्य भावोद्रेकं जनयति तद्यथाहि-

अक्लिष्टबालतरुपल्लवलोभनीयं पीतं मया सदयमेव रतोत्सवेषु।
बिम्बाधरं स्पृशसि चेद् भ्रमर प्रियायास्त्वां कारयामि कमलोदरबन्धनस्थम्॥
नातः परं किञ्चिदनुपनीतं साक्षादिव तन्मयेन हृदयेन।
स्मृतिकारिणा त्वया मे पुनरपि चित्रीकृता कान्ता॥

IIJ Impact Factor : 2.193 ISSN 2349-364X

वेदाञ्जली

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोधपत्रिका

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-६ अंक-१२, भाग-१ जुलई-दिसम्बर, २०१९

प्रधान सम्पादक

डॉ० रामकेश्वर तिवारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, श्री बैकुंठनाथ पवहारी संस्कृत महाविद्यालय

बैकुंठपुर, देवरिया

सह सम्पादक

श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशन : वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी, वाराणसी

- काव्यप्रकाशानुरूपकाव्यगतदोषविमर्श — 148–154
  शैलेशकुमारपाण्डेय
- महाकवि भास के महाभारत आधारित नाटकों में
  नायकेतर पात्रों की उपादेयता — 155–160
  सुखवीर यादव
- शिक्षा में धार्मिक शिक्षा का स्थान — 161–163
  सुमन बैरवाल
- दशरूपक एवं नाट्यदर्पण का वस्तु सविधानात्मक दृष्टिकोण — 164–167
  डॉ० सुशान्त कुमार उपाध्याय
- आधुनिककाले ज्योतिषशास्त्रेण सहायुर्वेदस्य सम्बन्धः — 168–170
  मनीष कुमार त्रिपाठी
- बौद्ध परंपरा एवं डॉ० अम्बेडकर की दृष्टि से
  मानववादी अवधारणा का दार्शनिक विश्लेषण — 171–174
  डॉ० राजेन्द्र कुमार वर्मा व प्रिया मलिक
- आचार्य मम्मट की दृष्टि में ध्वनिभेद — 175–178
  स्वीटी रानी
- सतत-व्यापक मूल्यांकन के सन्दर्भ में अभिज्ञता एवं अभिवृत्ति — 179–184
  डॉ० राकेश गौतम
- महाकविकालिदास विरचित महाकाव्यों की समीक्षा — 185–188
  डॉ० अरविन्द कुमार
- आधुनिक साहित्य में अलंकार — 189–190
  डॉ० शिव शंकर ठाकुर
- समकालीन धार्मिक विचारों के परिप्रेक्ष्य में धार्मिक भाषा का भविष्य — 191–194
  Ashish Kumar
- सारस्वतपाणिनीयव्याकरणयोः प्रक्रियाभिन्नत्वम् — 195–197
  भट्ट अश्विन भवानीशंकर
- राजस्थानी भाषा में वीरकाव्यों का विश्लेषण और अन्वेषण — 198–201
  भाजू राम गुर्जर
- • तिरुमङ्गैयाळ्वारस्य 'भक्तिसार' इत्यनुपमाभिधानप्रादिवैभवम् — 202–206
  Dr. B. Keshavaprapanna Pandey
- सुस्थिरजीवनशैल्या आधार — 207–210
  Dr. Menakarani Sahoo
- इक्कीसवीं सदी में हिंदी भाषा का वैश्विक विस्तार — 211–213
  डॉ० प्रिया ए०
- मनुस्मृति तथा सूर्यसिद्धान्त में उपलब्ध कल्पगणना का अन्तःसम्बन्ध — 214–219
  डॉ० प्रियंका जैन
- प्रबोधचन्द्रोदयनाटके काव्यसौन्दर्यतत्त्वपरिशीलनम् — 220–231
  Dr. Sushant Pradhan

महाकविकालिदास विरचित महाकाव्यों की समीक्षा

डॉ0 अरविन्द कुमार*

महाकवि कालिदास सरस्वती के वरद पुत्र हैं। वे अपने काव्यों के कारण आज भी अमर हैं। इनके काव्य केवल काव्य ही नहीं है अपितु सुन्दरता और सरसता के निदर्शन हैं। इनकी कविता कामिनी ने भारतीयों व पाश्चात्यों सभी का मन मोह लिया है। यही कारण है कि कालिदास को विश्व का सर्वोत्कृष्ट महाकवि एक स्वर से मान लिया गया है। इनकी रचनाओं में माधुर्य गुण सन्निवेशित कोमलकान्त पदावली का जैसा सहज और सरल प्रयोग हुआ है और उसमें सहृदय सामाजिकों के हृदयों को आह्लादित करने वाले रस का परिपाक वह अद्वितीय है। संस्कृत महाकाव्यों के रचयिताओं में महाकवि कालिदास का स्थान अग्रगण्य है इन्होंने दो महाकाव्य लिखे हैं - रघुवंशम् तथा कुमारसम्भवम्।

रघुवंशम् - रघुवंश महाकाव्य कालिदास का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य है। महाकाव्य की रचनाशैली की जैसी प्रौढ़ता यहाँ दिखाई देती है वह अत्यन्त दुर्लभ है। कालिदास की यह विशेषता है कि कम शब्दों में अधिक कहना। कालिदास जब प्राकृतिक दृश्यों या किसी पात्र का वर्णन करते हैं, पाठकों में स्वयं प्रवेश कर करते हैं। क्योंकि जिस समय पाठक यह सोचना प्रारम्भ करते हैं कि अब वर्णन कुछ ज्यादा ही हो गया है वे उससे पूर्व ही पुनः कथानक पर प्रवृत्त हो जाते हैं, इसी कारण रघुवंश अत्यन्त सरस प्रवाहपूर्ण एवं सौष्ठव लिए हुए हैं। पाठक अनवरत रूप से उसे पढ़ने में संलग्न रहता है। रसविभोर हो जाता है। इस महाकाव्य में अलङ्कारों का बहुत स्वाभाविक प्रयोग है। कहीं भी वे लादे हुए प्रतीत नहीं होते। विशेषतः उपमा अलङ्कार तो उनका प्रिय अलङ्कार रहा है। जैसा उन्होंने उपमालङ्कार का प्रयोग किया है वह अनुपम है। उपमान और उपमेय के लिङ्गादि की समानतापूर्वक वर्णन करना कालिदास की विशेषता है।

महाकवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य को 19 सर्गों में वर्णित सूर्यवंश के राजाओं का यशोगान किया गया है। प्रथम सर्ग से 9 सर्गों तक राम के चार पूर्वजों का उल्लेख है - दिलीप, दशरथ, अज और रघु। 10 सर्ग 15 सर्ग तक रामचरित का तथा अन्तिम 4 सर्गों में राम के वंशजों का वर्णन है। 19 सर्गों में आकर्षक चरित चित्रण और विशद वर्णनों से उसकी शोभा में वृद्धि करना और इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में रस-व्यञ्जना तथा उदात्त शैली का उचित समन्वय करना ये कार्य कवि सर्वातिशायिनी प्रतिभा से ही सम्पादित हो सकते हैं। अज का विलाप इन्दुमती का स्वयंवर राम तथा सीता की विमान यात्रा, निर्वासित होने लक्ष्मण द्वारा सीता का सन्देश भेजना, शून्य अयोध्या का उसकी अधिष्ठात्री देवी द्वारा कुश के स्वप्न में वर्णन इसके प्रति घटना इतनी स्वाभाविक और सुन्दर शैली में दर्शाया गया है अधिकतर सभी मुख्य रसों का प्रयोग रघुवंश में हुआ है।

वसिष्ठ और वाल्मीकि के आश्रम तथा सर्वस्वत्यागी रघु के वर्णन में शान्तरस का प्राधान्य है। अग्निमित्र के विलास वर्णन में शृङ्गार का, अज विलाप में करुण का, अज और राम के युद्ध प्रसंगों में वीर का, अलंकारों का प्रयोग भी भाव या दृश्य के चित्र को अधिक चटकीला बनाने के लिए प्रयोग हुआ है इसकी भाषा सरल है। सामान्य संस्कृत जानने वाले भी उसका आनन्द पा सकते हैं कालिदास ने नारी सौन्दर्य के साथ शृङ्गारिक रूप का भी वर्णित किया है-

*सहाचार्य (साहित्य विभाग) श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-110016

वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा वह्नौ विशुद्धामपि यत्समक्षम्।
मां लोकवादश्रवणादहासीः श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य॥

परित्यक्ता सीता लक्ष्मण से कहती है कि तुम मेरी ओर से राजा राम से यह सन्देश कहना लंका विजय के बाद अग्निदेवी, समस्त देवताओं वानरों ने मेरी पवित्रता का प्रमाण दिया था क्या आपकी श्रद्धा उनमें भी नहीं? आपने लोगों के निराधार प्रवाद को सुनकर ही अपनी वान्दना पत्नी का परित्याग कर दिया। क्या आपकी विद्वता या कुल अनुरूप यह आचरण है? 'स राजा' क्या ही चुभता हुआ व्यंग्य है। राम पहले राजा है, पति बाद में। रघुवंश का अज-विलाप उनके करुण-रस के उत्कृष्ट उदाहरण है पत्नी के वियोग पर अज की कैसी दशा हो गई है-

विललाप स बाष्पगद्गदं सहजामप्यपहाय धीरताम्।
अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु॥'

अज अपना सहज धैर्य छोड़कर सिसकियों से अवरुद्ध हुई वाणी से फूट-फूटकर विलाप करने लगे। अधिक ताप से लोहा भी पिघल जाता है फिर शरीरधारियों की तो बात ही क्या है।

कुमारसम्भवम् - महाकवि कालिदास की कला की सुन्दर रचना है। उदात्त एवं कोमल कल्पना तथा अपनी सुन्दर भाव-व्यंजना, प्रांजल पद-विन्यास के कारण वह आधुनिक रुचि के विशेष अनुकूल है। कालिदास की वर्णन शक्ति 'कुमारसम्भव' में चारूरूप में प्रकट हुई है। कहीं पर बसन्त का मनोहर वर्णन है कहीं प्रियतम की वियोग-जन्य ज्वाला चित्त को दग्ध और संसार को शून्य कर रही है। कहीं विवाहित सौख्यों का आनन्द हो रहा है। बाह्य प्रकृति का मनोरम चित्रण इस काव्य की विशेषता है। प्रारम्भ में हिमालय का संश्लिष्ट, वर्णन, बिम्बग्राही तीसरे सर्ग में अकस्मात बसन्त के आगमन पर वन-श्री का वर्णन, चौथे सर्ग में रति-विलाप पाँचवें सर्ग में बटुवेषधारी शिव तथा तपस्विनी पार्वती का संवाद य विषय बहुत ही उत्कृष्ट प्रसादपूर्ण शैली में वर्णन किया गया है। कवि की लक्षणा शक्ति भी इसमें खूब प्रस्फुटित हुई है।

शिव-पार्वती का विवाह केवल रति-सुख के लिए नहीं था। उनके समागम से तारकासुर का संहार करने वाले पर तेज-पुंज कार्तिकेय का जन्म होता है। शिव पार्वती का दैवी विवाह और प्रेम, मानवीय विवाह और प्रेम का प्रतिरूप है, जो वंश की वृद्धि और गृह की सुरक्षा के लिए परमावश्यक है। कालिदास की सभी कृतियाँ प्राय: शृङ्गार रस प्रधान हैं। इसका यह अभिप्राय यह नहीं कि वे वासना-जन्य प्रेम के पक्षपाती थे। मदन का भस्म हो जाना तथा पार्वती का शिव को अपने सौन्दर्य-पाश में बाँधने में असफल होना यह सिद्ध करता है कि कवि बाढ़ की तरह आने वाली, तथा बाह्य आकर्षण तक ही सीमित रहने वाली वासना का घोर विरोधी है। वासनाजनित क्षणभंगुर प्रेम का फल दु:ख और क्लेश के अतिरिक्त और कुछ नहीं। काम-वासनाओं को बिना जलाये सच्चे स्नेह की उपलब्धि नहीं हो सकती, बिना तपस्या के स्नेह कभी परिनिष्ठित नहीं हो सकता - यही कुमारसम्भव महाकाव्य का सन्देश है। कालिदास के सर्वाङ्गसुन्दर काव्यों में भारतीय सौन्दर्य का आदर्श कवि ने 'कुमारसम्भव' में वर्णित किया है-

स्थिता: क्षणं पक्ष्मसु ताडिताधरा: पयोधरोत्सेधनिपातचूर्णिता:।
वलीषु तस्या: स्खलिता प्रपेदिरे चिरेण नाभिं प्रथमोदबिन्दव:॥'

पार्वती की अनिन्द्य सुन्दरता का प्रकारान्तर से अत्यन्त मनोहर वर्णन कवि ने किया है जब पार्वती खुले स्थान पर बैठकर तपस्या करती थी, तब वर्षा की बूंदें किस प्रकार उनके ललाट स्थल से नाभि तक टकराती बलखाती पहुँचती थीं, और उनकी बरौनियां घनी थी, अत: जल की बूंदें कुछ देर

IIJ Impact Factor : 3.178 ISSN 2349-364X

वेदाञ्जली

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोधपत्रिका

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-७ अंक-१३, भाग-१ जनवरी-जून, २०२०

प्रधान सम्पादक

डॉ० रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक

श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशन : वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी, वाराणसी

- वार्धक्य जीवन की त्रासदी और मुक्ति की छटपटाहट
  (गोविंद मिश्र के कहानी संग्रह 'मुझे बाहर निकालो' का केन्द्रीय तत्व) 132–134
  प्रदीप कुमार
- सविनय अवज्ञा आंदोलन और सेठ जमनालाल बजाज की सहभागिता 135–138
  रामसिंह सामोता
- पुरुषार्थ – चतुष्टय में "अर्थ" का स्थान 139–143
  सरिता कुमारी महतो
- भारतीय समाज में वर्ण, जाति और वर्ग 144–146
  सत्येन्द्र कुमार पाण्डेय
- व्यङ्ग्य कवि प्रमोद कुमार नायक के संस्कृत साहित्य में नारी चेतना 147–150
  शशी मधुरिया व डॉ० पूर्णचन्द उपाध्याय
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भुवनेश्वर की एकांकी का मूल्यांकन 151–155
  शशि शेखर
- वंचितों तक पहुँच : शिक्षारूपी प्रकाश 156–160
  श्वेता मौर्या
- डॉ० दयाकृष्ण विजय : काव्य में प्रकृति और
  संस्कृति का समन्वयात्मक स्वरूप 161–165
  डॉ० वर्षा रानी व्यास व श्रीमती सीमा रानी सेन
- ज्योतिषशास्त्रे भास्कराचार्यमतेन कालविचार 166–170
  तरुण कुमार झा
- शिक्षा के नव आयाम की आवश्यकता एवं गुणवत्ता :
  वैश्विक महामारी के परिप्रेक्ष्य में 171–175
  कंचन
- महात्मा गांधी का समाज दर्शन–आधुनिक परिप्रेक्ष्य में 176–180
  डॉ० विश्व रंजन किरण
- बौद्ध धर्म में मध्यम मार्ग : एक अध्ययन 181–185
  आलोक कुमार बौद्ध
- संस्कृतलघुनाट्यग्रन्थानां अलङ्कारतत्वविमर्श 186–189
  अमित कुमार दुबे
- शब्दशक्ति 190–193
  दीपककुमार
- नाटकीयेषु पशुपक्षिणां सौन्दर्यम् 194–196
  डॉ० अरविन्दकुमार
- महामहोपाध्यायश्रीमिश्रकृत गीताशङ्करकाव्यस्य महत्त्वप्रतिपादनम् 197–199
  डॉ० अर्चना कुमारी
- दाम्पत्य–जीवनम्प्रति महाकविकालिदासस्य विचार 200–205
  डॉ० गीता कुमारी

नाटकीयेषु पशुपक्षिणां सौन्दर्यम्

डॉ. अरविन्दकुमार:*

संस्कृतनाटकेषु पशुपक्षिणां सौन्दर्यं विद्यते। भावानुवादिकृतरमणीचित्रं समादधाना: पशुपक्षिण: कश्चिदनन्यमेव सौन्दर्यराशिं वितन्वति इति विचारणा स्फुरति।

उत्तररामचरिते पशुपक्षिणां रामादिभि: सह सम्बन्धो रमणीयतमो वर्तते। पञ्चवटीप्रदेशे सीता स्वपालितकरिणो रक्षणार्थं राममाह्वयति। रामोऽपि तत्र स्वबान्धवा इति मृगान् निभालयति। भवभूति: करिकलभकं मानवरूपेण दर्शयति प्रक्षकान् यथा -

लीलोत्खातमृणालकाण्डकवलच्छेदेषु सम्पादिता:, पुष्यत्पुष्करवासितस्य पयसो गण्डूषसंक्रान्तय:।
सेक: शीकरिणा करेण विहित: कामं विरामे, पुनर्यत्स्नेहादनरालनालनलिनीपत्रातपत्रं धृतम्॥

मृगपक्षिण: पादपाश्चेति सीतया ते पशुपक्षिणो नाटकीयेषु परिगणिता:। किं न वासन्त्या साधु प्रोक्तम् -

ददतु तरव: पुष्पैरर्घ्यं फलैश्च मधुश्च्युत:, स्फुटितकमलामोदप्राया: प्रवान्तु वनानिला:।
कलमविरलं रज्यत्कण्ठा: क्वणन्तु शकुन्तय:, पुनरिदमयं देवो राम: स्वयं वनमागत:॥

एतेषु पशुपक्षिषु नायकानां बृहत्परिवार एव शोभत इति परिणमति जनकस्य प्रमाणवचनेन

नूनं त्वया परिचितं च वनं च भीरु, तां न व्यथां प्रसवकालकृतामवाप्य।
कृपाद्गणेषु परित: परिवारकेषु, संत्रस्तया शरणमित्यसकृत् स्मृतोऽहम्॥

अत्र सिंहादय: सन्ति दौवारिका:। निसर्गोपात्तस्वभावा इमे पशुपक्षिण:। तेषां साह्यं नियमत: सन्दर्भा नाटकेषु कवीनां तां योजनां प्रमाणयन्ति यथानियतार्थेषु नायकादीनामनुषङ्गो विस्तरव्याप्तिमहिम्ना चराचरमभिप्रैति, अथ च तेषां महानुभावेन लोकान् रञ्जयति। घोरेऽपि पशूनां साह्यं नाटके आधुनिकयुगे सम्पूर्णं वर्ण्यते।*

विक्रमोर्वशीयस्य पञ्चमेऽङ्के गृध्राक्षेपेण राजकीयो मणिर्हियते - एष एष खलु मुखकोटिलग्नहेमसूत्रेण मणिना लिखितमिवाकाशं परिभ्रमति। स तु गृध्रो विहगतस्करो विरागदर्शनीयोऽपि च राज्ञाभिहित:। विदूषकस्तं स्वकुम्भीलक इति सञ्जानीते।

कश्चित्तु रमणीयं पक्षिणं प्रेक्षकाणां मानसं प्रीतिकल्पयितुमेव विक्रमोर्वशीये कुमारमुखेन आवर्तते -

य: सुप्तवान् मदङ्के शिखण्डकण्डूयनोपलब्धसुख:।
तं मे जातकलापं प्रेषय मणिकण्ठकं शिखिनम्॥

अपरं च राजा निवर्तितमृगतृष्णानि वनान्ताश्रयिष्ये इति प्रतिजानीते। स प्रसङ्गेऽस्मिन् गन्धद्विपकलभं भुजङ्गशिशुं च स्मरति।

अन्येषु श्रेष्ठाभिनेयकाव्येषु भूयस्तरं पशुपक्षिणां साह्यं कविभिरन्वेषितम्। तद्यथाभिधं विलसति - अभिषेके - वालिस्तु शाखामृग एव हन्यते। हनुमान् वानरो बहुविधं पराक्रमते। शुकसारणौ वानरीकृतौ। जटायुस्तु गृध्र एव पात्रीकृत:।

बालचरिते - दानवा: पशुरूपा विलसन्ति। तत्र कालियनागस्य दमनम्।

अभिज्ञानशाकुन्तलस्य द्वितीयेऽङ्के विदूषकस्तु सन्तापितं जीर्णकपोतस्य पृष्ठं परिसन्ताप्य समापयति। तृतीयेऽङ्के शुकोदरसुकुमारं नलिनीपत्रं इत्यादिना शुकपक्षी ध्यानपथगामी भवति। अत्र शकुन्तला तु अशरणप्रवेशसमा चक्रवाकवधूर्वियोगत्यमानेन काय सम्पन्नतोऽपि विषम - नेपथ्ये

*भारतवर्ष (मोहितर्यक्भावा:) श्रीनानकलुब्धाम्भोधिपरिपालनमिति ... (कन्दर्पप्रसादितपल्लव:) ... वनस्थली ॥ ॥

वेदाञ्जली, An International Peer Reviewed Referred Research Journal
वर्ष-७, अंक-१३, भाग-१, जनवरी-जून, २०२० | ISSN : 2349-364X

चक्रवाकवधूः आमन्त्रयस्व सहचरम्। उपस्थिता रजनी। अत्र तु चक्रवाकवधूः शकुन्तला, सहचरः ... तु गौतमी एव।

चतुर्थेऽङ्के कोकिलाभ्यः वृक्षाणां दूता एव गृहीतास्तेषां प्रतिवचनानि प्रकटयितुम्। यथा

अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः। परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिः॥'

... - वियोगकाले मृग्यो मयूराश्च करुणार्पणिताः सन्ति। यथा -

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः॥'

पञ्चमाङ्के शकुन्तला पुत्रकृतकदीर्घापाङ्गाय स्वहस्तेन जलदानं कथयति।

अत्र एवाभिज्ञानशाकुन्तलस्य श्रेष्ठता पशुपक्षिभिः पारिवारिकसम्बन्धस्थापनद्वारा ... षष्ठाङ्के तु मत्स्येन कृतः शकुन्तलोपकारो विवृतः। तस्योदरादङ्गुलीयकं निष्क्रान्तं ... तं नायकहृदये भूयिष्ठं स्थापयति।

... तु नायकस्य मानसं ध्यातव्याः सन्ति मृगादयः। यथा-

कार्या सैकतलीनहंसमिथुना स्रोतोवहा मालिनी
पादास्तामभितो निषण्णहरिणा गौरीगुरोः पावनाः।
शाखालम्बितवल्कलस्य च तरोर्निर्मातुमिच्छाम्यधः
शृङ्गे कृष्णमृगस्य वामनयनं कण्डूयमानां मृगीम्॥'

अत्र कुसुमरसपाटच्चरो मधुकरो दृश्यते शकुन्तला - वदनामलग्रहणाय। तं राजा भयं दर्शयति -

प्रतिपालयति मधुकरीत्यादि।'

बिम्बाधरं स्पृशसि चेद् भ्रमर प्रियायास्त्वां कारयामि कमलोदरबन्धनस्थम्॥'

अभिज्ञानशाकुन्तलस्य दुष्यन्तः स्वपुत्रदर्शनेन विस्मयति। तत्र सिंहशिशुरस्य पुत्रस्य क्रीडनकं वर्तते।

अर्धपीतस्तनं मातुरामर्दक्लिष्टकेसरम्। प्रक्रीडितुं सिंहशिशुं बलात्कारेण कर्षति॥'

अत्र मृत्तिकामयूरोऽपरं क्रीडनकं सर्वदमनाय वर्तते। प्रथमाङ्के मालविकाग्निमित्रे उपमानद्वारेण ... प्रकटयति तद्यथा - विदूषकः - मैवम्। चारिद अन्योन्यकलहविग्रहगर्वितसिंहकलापमर्जितौ ... । अत्र मयूरा मृदङ्गध्वनिमनु जीमूतस्तनितविशङ्की मायूरीमार्जनया सर्वानि मदयति।

अन्यत्र राज्ञा उपमानमपि गृध्रो विदूषकेण समीक्षितः ... इव गृध्र ... मोदकस्य।' राजा वसन्ते उन्मत्तानां कोकिलानां श्रवणसुभगं कूजितं वर्णयति। तदा ... ।' बकुलावलिका राजानं प्रति कथयति - इह कुटिलगतिः सर्प इव दृश्यते। अनन्तरं ... दर्दुरः स्मृतः। दर्दुरः व्याहरतीति किं देवः पृथिव्यां वर्षितुं विरमति।' विदूषकोऽपि तदेव समर्थयति। यथा- अहो अनर्थः सम्पतितः बन्धनभ्रष्टो गृहकपोतो बिडालिकाया आलोके पतितः। ... कथायाः मूत्रभागीकृता।' विक्रमोर्वशीयस्य प्रथमाङ्के ... गरुडवेगाभवन सम्भूतः। ... मातलिना स्मृताः। रथस्तत्र हरिणकेतनः।'

... तत्र राजमहंसी नालकश्च ... गेन्यतः। 'सूत्रं मृणालादिव राजहंसी'।'

... तया दिव्यपर्णाभिलाषिणा नालकश्च गृहीतम्।'

चतुर्थेऽङ्के नीलकण्ठाः वियोगोन्मत्तस्य नायकस्य बन्दिनः सन्ति।' नायकः पूर्णादिन्याः ... पश्यति।' परभृता तु नायकेन साक्षाद्भूता दृश्यते। स तां सम्बोधयति

त्वां कामिनो मदनदूतिमुदाहरन्ति मानावभङ्गनिपुणं त्वममोघमस्त्रम्।
तामानय प्रियतमां मम वा समीपं मां वा नयाशु कलभाषिणि यत्र कान्ता॥'

I2OR Impact Factor : 3.250 ISSN 2349-364X

वेदाञ्जली Vedanjali

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोधपत्रिका

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-८ अंक-१५, भाग-२ जनवरी-जून, २०२१

प्रधान सम्पादक
डॉ० रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक
श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशन : वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी, वाराणसी

- विज्ञानामृतभाष्यदिशा जीवस्वरूपम् — 135–138
  श्रीमान् विश्वास
- अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना — 139–141
  डॉ० अनीता जैन
- संस्कृतनाटकेषु रंगनिर्माणविमर्शः — 142–145
  डॉ० अरविन्दकुमार
- योगोपनिषत्सु योगाङ्गानि — 146–150
  डॉ० आशीष मौदगिल
- बौद्ध परिपथ के प्रमुख पर्यटन स्थल — 151–152
  डॉ० दुर्गेश मिश्रा
- नारदपुराणपरिप्रेक्ष्ये ज्यौतिषम् — 153–158
  Dr Muralisham H
- जिन्दगी 50-50 अधूरेपन में पूरे की तलाश — 159–162
  डॉ० नितिन सेठी
- यजुर्वेदीयशिवसङ्कल्पसूक्तादृशा मनसः विवेचनम् — 163–166
  डॉ० पूजा
- शिवपुराणे धर्मो, दर्शनम्, धार्मिककर्मकाण्डस्तथा विश्वासः — 167–170
  Dr Ramesh Babu Bandi
- शिशुपालवधमहाकाव्ये चतुर्दशसर्गे माघस्य कविप्रगल्भता — 171–173
  डॉ० राहुल कुमार बरुआ
- रोगविज्ञानं प्रश्नमार्गग्रन्थे — 174–178
  डॉ० श्रीनिवासन पी०के०
- अवसादग्रस्त एवं दिग्भ्रमित मन की चिकित्सा का ग्रंथ गीता– वर्तमान में कोरोना के परिप्रेक्ष्य में — 179–182
  डॉ० (श्रीमती) वन्दना द्विवेदी
- साम्प्रतिकसमाजे ध्यानयोगस्य प्रयोजनीयता — 183–185
  ममता रानी साहू
- हरियाणाप्रान्ते रचितमहाकाव्यरचनापरम्पराविमर्शः — 186–189
  गुरुप्रसाद
- पातञ्जलमहाभाष्ये विविध–वैज्ञानिकतत्त्वानां समीक्षणम् — 190–194
  हरिश्चन्द्र जगवान
- हिन्दी एवं पश्तो संरचना की समानता — 195–199
  जबीहुल्लाह फिक्री
- भारतीय नीतिशास्त्र के संदर्भ में पुरुषार्थ का विश्लेषण — 200–204
  जागृति कुमारी
- शारदातिलकभाणे प्रतिफलितं गणिकाजीवनम् — 205–209
  जयन्ती पाल चौधुरी

संस्कृतनाटकेषु रङ्गनिर्माणविमर्शः

डॉ. अनिरुद्धकुमारः*

नाट्यप्रयोगार्थं रङ्गमण्डपः भवति। रङ्गमण्डपे त्रयो भागाः सन्ति। सभास्थानम्, नेपथ्यम्, रङ्गपीठञ्च
नाट्यधर्मानुकार्यस्य सज्जा प्रयुज्यन्ते।
भवति। रङ्गपीठे पात्राणि नाट्यं कुर्वन्ति। नेपथ्ये आहार्यं

सभास्थानम् – रङ्गपीठमग्रतस्तात् सभास्थानं क्रियते। तत्र सामाजिका आगच्छन्ति। रङ्गपीठ-सभास्थानयोर्मध्ये पुष्पकर्णिका वा भवति। एतस्यापि उपभागा भवन्ति।

मुखकर्णिका प्रथमं अङ्कारम्भात् पूर्वमङ्कान्तिमसज्जा रङ्गपीठे निधीयते। मुखजवनिकायाम् अपसारणेन
निष्क्रमणं मुखजवनिकाप्रसारणेन विधीयते।
रङ्ग आरम्भकाल एव दृश्यते। अङ्कान्ते पात्राणां

अभिनवगुप्त सूचयति – तत् । अङ्क। परिसमाप्तौ यवनिकया तिरोधानरूपं निष्क्रमणं दर्शनीयम्। प्रतिमानाटकस्य द्वितीयाङ्कस्यान्ते दशरथस्य मृत्योरनन्तरं काञ्चुकीयो यवनिकास्तरणं करोतीति वाक्येन मुखयवनिकां विस्तारितम्। यवनिकान्तरणानन्तरमपि नाट्य प्रकारान्तर्वेशनेन स्पष्टं ज्ञायते यदिदं मुखजवनिकानाटकगृहम् विभज्यमाना आसीत्। यथानाटक खण्डशस्तस्य विघटनं कृतम्। उत्तररामचरितानुसारेण बहुसंख्यकानामपि प्रेक्षकाणां सम्पूर्णतस्थानसम्मिलितात्क्रियते' तत्र रङ्गप्राश्निका आसन्।

सभाप्रमुखः प्रेक्षकाणां स्थानसम्मिलितस्य साम्यकत्वेन परितुष्य सूत्रधारं प्रयोगप्रारम्भायानुजानाति स्म। तत्र प्रेक्षका नाट्यविषयकाणि स्वाभिमतानि प्रकटयन्ति। तथा उत्तररामचरितस्य प्रियदर्शिकायाः, बालरामायणस्य गर्भनाटकेषु दर्शकानां परम्परामयादै, स्मरन्ते।

नाट्यमण्डप द्वाराणि – अभिनवगुप्तस्य मतानुसारेण द्वाराणामस्तित्वविधं वर्णनं प्रस्तौति। (1) परिक्रमतः पात्राणां नेपथ्यगृह प्रवेशार्थं द्वारमेकं बभूव। (2) नेपथ्यगृहात् रङ्गपीठे प्रवेशार्थं पुनः रङ्गपीठान्नेपथ्यगृह निष्क्रमणार्थं च द्वारद्वयं बभूव। (3) प्रेक्षकाणां प्रवेशार्थं पूर्वस्यां द्वारमेकं बभूव। एवं चतुर्द्वारं नाट्यगृहम्।' अन्य बहुद्वारं नाट्यगृहमपि सम्भवति। कस्य द्वारेण प्रवेशो निष्क्रमो वा भवतीति प्रवृत्त्या निर्धारणीयम्।' तद्यथा – उत्तरद्वारेण दक्षिणान्यवलम्बनः प्रवेशः। अन्यथा अन्यतरेण प्रवृत्तिविभागः।'

नेपथ्यस्याभिप्रायद्वयम् – 'नेपथ्य' इति पदस्य विशिष्टः सामान्यश्च द्विविधोऽभिप्रायोऽवधारणीयः। विशिष्टार्थेन नेपथ्यं तु केवलं रङ्गमण्डपस्य पश्चिमवर्ती भागो रङ्गशीर्षस्य पृष्ठतो भवति, यत्र पात्राणि रङ्गपीठप्रवेशात् पूर्वं वर्तन्ते। विशिष्टाभिप्रायेण नेपथ्यतः पात्राण्येव वर्तन्ते।

नेपथ्यं सामान्याभिप्रायेण नेपथ्यं तु रङ्गमण्डपाद् बहिरपि स्थानं यथावश्यकं द्योतयति। अस्मिन् प्रसङ्गे 'आकाशे' इति पदस्यापि अभिप्रायो विचारणीयः। नाटकेषु बहुषु स्थलेषु नेपथ्याद् भिन्नार्थे 'आकाशे' इति पदं व्यवहृतम्। यथाभिज्ञानशाकुन्तलस्य पञ्चमाङ्के हंसपदिका आकाशे गायति।'
'अभिनवमधुलोलुपो भवान्' इत्यादि।'

राजशेखरेण बालरामायणे नेपथ्ये आकाशे च पदे परस्परं भिन्नार्थके इति अभिनिवेशनाट्यनिर्देशेन स्पष्टयति। 'नेपथ्ये' रङ्गनेपथ्यविकोन्मीलनार्थं चाकाशे' नेदमन्ता बहुभिः कविभिर्गृहीतम्। ते तु सर्वमपि प्रोक्तानि कथानानि 'नेपथ्ये' इत्यवधारयन्ति। यथा – नागानन्दे नभसः पुष्पवृष्टिर्भवति दुन्दुभयश्च ध्वनन्ति तनु नेपथ्ये पुष्पाणि पतन्ति' इति नाट्यनिर्देशेन दर्शितम्। इदं तु सर्वथा अशुद्धमेव, यतो हि नाम तत्र गरुडो रङ्गे स्थितः (ऊर्ध्वं दृष्ट्वाकर्ण्य च) अतः पुष्पवृष्टिर्दुन्दुभिध्वनिश्च। सन्दिग्धम्। अतः-

आमोदानन्दितालिर्निपतति किमियं पुष्पवृष्टिर्नभस्तः।
स्वर्गे किं वैष चक्रं मुखरयति दिशां दुन्दुभीनां निनादः॥'

---

*सहाचार्यः (संस्कृतविभागः) श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम् (केन्द्रीयविश्वविद्यालयः) कटवारियासरायः, नई दिल्ली – 110016

तत् स्थानं भवति यदपि 'नेपथ्ये' इति नाट्यनिर्देशः। तदनुसारं 'आकाशे' किं न तिरस्करणीयमिति प्रश्नोऽसम्भाव्यः।'' नाट्यशास्त्रे भरतो यवनिकाया उपयोगं निर्दिशति

एतानि तु बहिर्गीतान्यन्तर्यवनिकागतैः।
प्रयोक्तृभिः प्रयोज्यानि तन्त्रीभाण्डकृतानि च॥''
ततः सर्वैस्तु कुतपैः संयुक्तानीह कारयेत्।
विघट्य वै यवनिकां नृत्तपाठ्यकृतानि तु॥''

नेपथ्यम् - रङ्गपीठस्य पश्चाद्भूमिर्नेपथ्यं कुशीलवकुटुम्बस्य गृहम्। तत्र द्वारद्वयेन पात्राणां रङ्गे प्रवेशः स्वकार्यं सम्पाद्य अथवान्यकार्यार्थं च पुनर्नेपथ्ये निष्क्रमणं प्रयुक्तं भवति। औदीच्या दक्षिणद्वारेण प्रविशन्ति, वामद्वारेण निष्क्रामन्ति च। दाक्षिणात्यानां च विपरीता प्रवृत्तिर्नाट्यविधानकृद्भिः प्रतिपादिता।''

(1) मृच्छकटिकस्य दशमेऽङ्के नेपथ्ये पौरा रङ्गस्थं शर्विलकं प्रति वदन्ति - आर्य चारुदत्त, मुच्यतां मुच्यताम्। व्यापादयामैतं शकारम्।

(2) नेपथ्ये वर्तमाना जना रङ्गस्थपुरुषेण समग्रं भाषन्ते; तं सम्बोधयन्ति। यथा विक्रमोर्वशीयस्य चतुर्थेऽङ्के कश्चिन्मुनिः नेपथ्ये स्थितो राजानं ब्रवीति। राजापि तस्य वचनं श्रुत्वा तमालोकयति प्रतिवदति। तथैवाभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थेऽङ्के नेपथ्ये दुर्वासा ब्रवीति, अनसूया च पुरोऽवलोक्य तं पश्यति।

(3) रङ्गस्थपात्राणि नेपथ्यपात्राणां विषये कश्चिदद्भुतं सकौतुका नेपथ्यद्वारेणावलोकनमार्गेण ज्ञानमार्गेण च नेपथ्यं परिलक्ष्य प्रेक्षकेभ्यः स्वानुभूतिं प्रकटयन्ति। यथा विक्रमोर्वशीयस्य तृतीयाङ्कस्य विष्कम्भके कञ्चुकी - (नेपथ्याभिमुखमवलोक्य।) अये इत एव प्रस्थितो देवः -

परिजनवनिताकरार्पिताभिः परिवृत एष विभाति दीपिकाभिः।
गिरिरिव गतिमानपक्षसादादनुतटपुष्पित-कर्णिकारयष्टिः॥''

यावदेनमवलोकनमार्गे स्थितः प्रतिपालयामि।

रङ्गपीठम् - रङ्गपीठे वस्तुतो नाट्यं प्रवर्तते। रङ्गस्य द्वौ भागौ स्तः। रङ्गपीठं, रङ्गशीर्षं च। तत्र रङ्गपीठं पूर्वभागः रङ्गशीर्षं च पश्चाद्भागः। उभयोर्मिलितयोरपि संज्ञा रङ्गपीठमेव। रङ्गशीर्षं तु पुरुषस्य शीर्षमिवोपरिभागः, शिरस्थानीयः। नेपथ्याद्रङ्गे प्रविशन्ति पात्राणि यावत्कालं कार्याण्यनुतिष्ठन्ति तावत्कालं रङ्गपीठभागे वर्तन्ते, पश्चात् यावन्मात्रं कार्यहीनानि भवन्ति तावन्मात्रं पश्चाद् गत्वा रङ्गशीर्षे तिष्ठन्ति गमनागमनं पात्राणां ततः कार्यवशात् प्रवर्तते। रङ्गपीठस्य प्रायः पर्याय एव रङ्गः प्रयुज्यते। यथा

प्रयुज्य रङ्गान्निष्क्रामेत् सूत्रधारः सहानुगः।''
प्रविश्य रङ्गं तैरेव सूत्रधारपदैर्व्रजेत्।''
रङ्गं तु ये प्रविष्टाः सर्वेषां भवति यत्र निष्क्रामः।''

निष्क्रमणं प्रवेशश्च - रङ्गपीठात् पात्राणि निष्क्रामन्ति। अङ्कस्यान्ते सर्वाणि पात्राणि तिरस्करिणी-प्रसारणे तिरोहितानि भवन्तीति तेषां निष्क्रमणम्। अङ्कमध्ये पात्राणि नेपथ्यद्वारेण निष्क्रम्य नेपथ्यं गच्छन्तीति साधारणतो दृश्यते किन्तु नैकस्थलेषु निष्क्रम्य पात्राणि रङ्गस्यापरभागमेव गच्छन्ति। यथा मृच्छकटिके शकारगृहान्मुक्तो भिक्षुः - 'तथा कृत्वा निष्क्रान्तः' इत्यनेन रङ्गपीठं न परित्यजत्यपितु तस्यापरस्मिन् भागेऽवस्थितां पुष्करिणीं गच्छति अदृष्टो भवति च वस्त्रप्रक्षालनाय। तस्मादपि प्रसारितादङ्कस्यान्तिमे भागे स पुनरपि 'अपटीक्षेपेण प्रविश्य' सम्भाषणे समर्थो भवति। अत्र प्रवेशस्तु रङ्गपीठस्यैकभागादन्यभागं प्रति गमनमेव। इयं पटी तु पुनर्यवनिकायाः निविष्टा। रङ्गस्य विविधभागा यथावश्यकं पटी-प्रावरणेन परस्परं तिरोहिताः सन्ति। ता पटीरपसार्यैकस्माद् भागादन्यं प्रविशन्ति पात्राणि कदाचित्।

पात्र-प्रवेशः - रङ्गे पात्रप्रवेशस्त्रिविधो भवति।

IIJ Impact Factor : 3.178 ISSN 2349-364X

वेदाञ्जली

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोधपत्रिका

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष - ७ अंक - १४, भाग - ३ जुलाई - दिसम्बर, २०२०

प्रधान सम्पादक

डॉ० रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक

श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशन : वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी, वाराणसी

- दृष्टान्तस्य लौकिकशास्त्रीयस्वरूपादिविमर्शः — 131–134
  Buddhadev Das
- प्रज्ञाचाक्षुषमहाकाव्ये अलङ्काराः — 135–137
  देवाशीषगुप्ता
- अलङ्कारशास्त्रे रसोन्मेषः, रसस्वरूपविचारश्च — 138–140
  Dr. A. Gunaseelan
- संस्कृतनाटकेषु संकेतस्वरूपम् — 141–143
  डॉ० अरविन्दकुमार
- महाभारतानुसारं राजधर्मविमर्शः — 144–146
  Dr Arundhati Ojha
- मोक्षसाधकानि शास्त्राणि — 147–150
  डॉ० गौतम ओझा
- कवेः प्रफुल्लमिश्रस्य कवितासु राष्ट्रीयभावना — 151–154
  डॉ० कमलाकान्त लेंका
- द्वैत-अद्वैत सिद्धांत के भेद में अविरोध — 155–157
  डॉ० कनक लता कुमारी
- उपलब्धि अभिप्रेरणा की अवधारणा — 158–162
  डॉ० कार्तिक पाल
- दर्शनेषु पाणिनीयव्याकरणस्य औचित्यम् — 163–164
  डॉ० लीलाधर भट्टराई
- अद्यतनसमाजे दर्शनशास्त्राणां प्रभावः — 165–170
  डॉ० सच्चिदानन्दस्नेही
- वाल्मीकि रामायण में प्रयुक्त प्रमुख अलंकार — 171–175
  डॉ० संगीता शर्मा
- महाभारत के स्त्री संदर्भ एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता — 176–178
  डॉ० शारदा वर्मा
- न्यायवैशेषिकयोः प्रमाणस्वरूपविमर्शः — 179–184
  श्रीशशाङ्कशेखरपात्र
- संस्कृतव्याकरणस्य मुनिदृष्ट्या विभाजनम् — 185–189
  डॉ० शशिभूषणमिश्र
- लोकोपकारकदेवः पर्जन्यः — 190–192
  डॉ० शत्रुघ्नपाणिग्राही
- राजेश जोशी की कविता और हमारा समय — 193–198
  डॉ० श्रीनिवास सिंह यादव
- गौरीदिगम्बर प्रहसन में मैनाक — 199–200
  डॉ० स्वरूप झा
- ब्रह्मसूत्रेषु आनन्दस्वरूपविचारः — 201–203
  हरिमोहनसिंह
- स्वस्थसमाजनिर्माणे श्रीरामकृष्णोपदिष्टसंहतिसमन्वयचिन्तनम् — 204–208
  कार्तिकमेटे

संस्कृतनाटकेषु सङ्केतस्वरूपम्

डॉ. अरविन्दकुमारः*

नाट्यनिर्देशाः सूचनात्मकाः भवन्ति। नाट्यनिर्देशाः प्रेक्षकाणां समक्षं विभावानुभावसञ्चारिणो यथायोगं पुरस्कृत्य रसमभ्यक्तिमानर्जयन्ति। नाटकेषु बहुशो नाट्यनिर्देशाः भवन्ति। ते सममेव पाठकानां नटानां नाट्याचार्याणां च कृते उपयुक्ता भवन्ति। नाट्यनिर्देशस्य बहुविधानि प्रयोजनानि वर्तन्ते। नाट्यनिर्देशस्योपयोगो नाट्याचार्याणां कृते भवतीति स्पष्टमेव। तदनुसृत्य ते नाटकस्याभिनये नटान् शिक्षयन्ति। प्रेक्षका नाट्यनिर्देशाभिज्ञा न भवन्ति। नाट्यनिर्देशस्याभिनीतं स्वरूपं पश्यन्ति प्रेक्षकाः। पाठकानां कृते तु सविशेषमुपयोगिनो भवन्ति नाट्यनिर्देशाः।

निमित्तसूचनाः - पश्चात्कार्यसूचकस्य निमित्तस्य नाट्यनिर्देशो भवति। तथा हि मुद्राराक्षसे राक्षसः - वामाक्षिस्पन्दनं सूचयित्वात्मगतमिति।' अभिज्ञानशाकुन्तले च राजा - इदमाश्रमद्वारम्। यावत् प्रविशामि। प्रविश्य निमित्तं सूचयन् अत्र 'निमित्तं सूचयन्' इति नाट्यनिर्देशेन प्रभवति श्लोकः -

शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य।

पात्रसज्जा - मृच्छकटिकस्य नवमेऽङ्के प्रविशति गृहीताभरणो विदूषकः इति नाट्यनिर्देशेन पात्रसज्जा निर्दिष्टा। मुद्राराक्षसे चरः प्रथमाङ्के प्रविशति। तदधिकृत्य - ततः प्रविशति यमपटेन चरः इति पात्रसज्जाद्योतकम्। अन्यत्रापि ततः प्रविशत्यप्रवेषः पुरुषः।' ततः प्रविशति लेखमलङ्करणस्थगिकामुद्रिकामादाय सिद्धार्थकः।' ततः प्रविशति पुरुषेणानुगम्यमानः संवत्तः सिद्धार्थकः।' ततः प्रविशति रज्जुहस्तः पुरुषः।' ततः प्रविशति यथानिर्दिष्टः सशस्त्रो राक्षसः।' ततः प्रविशति द्वितीयचाण्डालानुगतो वध्यवेशधारी शूलमस्कन्धेनादाय कुटुम्बिन्या पुत्रेण चानुगम्यमानश्चन्दनदासः।' ततः प्रविशति जवनिकावृतशरीरो मुखमात्रदृश्यश्चाणक्यः।' नागानन्दे बहुत्रो नाट्यनिर्देश ईदृशो वर्तते।[10] तथा हि - ततः प्रविशति मत्तो विविधविहङ्गवेशश्चषकहस्तो विटः स्कन्धारोपितमुखभाण्डश्चेटः। स्वशिरः शेखरात् पुष्पाणि गृहीत्वा चषकं विन्यस्य जानुभ्यां स्थित्वा नवमालिकाया उपनयति।[11]

मानसिकस्थितेर्निदर्शनम् - नाट्यनिर्देशेन क्वचित्स्थायिभावाः सञ्चारिभावा अनुभावाश्च संज्ञाप्यन्ते। स्वप्नवासवदत्तस्य तृतीयाङ्कस्यादौ वासवदत्ताया मानसिकस्थितेः सूचनाधायिनाट्यनिर्देशेन प्रस्ताविता। ततः प्रविशति विचिन्तयन्ती वासवदत्ता। प्रतिमानाटकस्य प्रथमाङ्के लक्ष्मणः - (सक्रोधम्) इत्यनेन नाट्यनिर्देशेन तस्य मानसिकस्थितिर्वर्णिता। एवमेव नाटकेषु सावेगम्, सकरुणम्, सविषादम्, सवितर्कम्, सरुदितम्, सलज्जम्, सानुरागम्, सस्मितम्, सोत्कण्ठः, सबाष्पम्, सशोकम्, सहर्षम्, विचिन्त्य, सचिन्तः, सबाष्पम्, विमृश्य, सप्रणयम्, सासूयम्, समाश्वासम्, सावज्ञम्, सविलक्षस्मितम्, विहस्य, सावष्टम्भम्, सनिर्वेदम्, सवैलक्ष्यम्, रुदित्वा, सचिन्तः, सव्रीडम्, सामर्षम्, सनिःश्वासम्, सानुरागम्, साकूतम् इत्यादयो नाट्यनिर्देशाः सन्ति। प्रतिमानाटकस्य पञ्चमेऽङ्के रावणस्य मानसिकस्थितिः 'मायाप्रकाशनपर्याकुलो भूत्वा' इति नाट्यनिर्देशेन प्रकाशिता।[12]

अभिज्ञानशाकुन्तलस्य प्रथमाङ्के शकुन्तला शृङ्गारलज्जां रूपयति, इति नाट्यनिर्देशः। द्वितीयाङ्कस्य विष्कम्भकात् पूर्वं ततः प्रविशति विषण्णो विदूषकः इति नाट्यनिर्देशेन विदूषकस्य मानसिकस्थितिः सूचिता। मालविकाग्निमित्रे अभिज्ञाने च ततः प्रविशति कामयानावस्थो राजा इति नाट्यनिर्देशेन नायकस्य मानसिकस्थितिः द्योतिता। अन्यत्र नाटकेऽस्मिन् निःश्वस्य मदनबाधां निरूप्य इत्यादि नाट्यनिर्देशेन मानसिकस्थितिर्विज्ञापिता।

अविमारकस्य चतुर्थाङ्कस्य प्रवेशके नलिनिकायाः सात्त्विकभावोपपत्तता नाट्यनिर्देशेन प्रकटितासीदित्थं ततः प्रविशति साम्रा नलिनिकेति नलिनिका अतिक्रान्तोत्सवः। रोदिति अत्र साम्रा रोदिति च सात्त्विकभावोपपत्तां प्रकटयतः।[13]

---

*सहाचार्यः (साहित्यविभागः) श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम् (केन्द्रीयविश्वविद्यालयः) कटवारियासरायः, नई दिल्ली 110016

कारणवचनम् - नाट्यनिर्देशेन कारणवचनं सूचितम्। तत्समर्थनाय परत: प्रकाशं कथ्यते। तद्यथा राजा - दोहदलक्षणं विभाव्य भवतु, अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्। अत्र दोहदलक्षणं विभाव्येति 'अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्' इति वाक्यस्य कारणवचनम्। विक्रमोर्वशीये पुत्रस्य चिरं इति समुदाचारोऽप्यनेकविधं वर्णितो नाट्यनिर्देशेन कुमारश्चापगर्भमञ्जलिं बद्ध्वा प्रणमतीति', कुमारो राजानमुपगम्य पादग्रहणं करोतीति च।

अभिनयनिर्देश: - मुद्राराक्षसे कर्णौ पिधायेति नाट्यनिर्देश: प्रथमाङ्के वर्तते। तृतीयेऽङ्के जानुभ्यां भूमौ निपत्येति नाट्यनिर्देश:। तत्रैव सकोपं मुखं परावर्तयति इति नाट्यनिर्देश:। अभिज्ञानशाकुन्तलस्य षष्ठाङ्कस्य विष्कम्भके 'कपोतहस्तकं कृत्वेति' नाट्यनिर्देशोऽभिनयनियोगात्मक:। स्वप्नवासवदत्तस्य प्रथमेऽङ्के यौगन्धरायण: 'कर्णौ दत्त्वा' कथमिहाप्युच्चार्यते। इत्यत्राङ्गिकाभिनयो निर्दिष्ट: श्रवणक्रियायाम् - कर्णं दत्त्वेति नाट्यनिर्देशेन। कश्चिदभिनयनियोगेन सह पात्राणां प्रवेशनिर्गमेऽपि नाट्यनिर्देशस्योपयोगो वर्तते। तद्यथा स्वप्नवासवदत्ते पञ्चमेऽङ्के राजा - स्वप्नान्ते हा वासवदत्ते। अत्र नाट्यनिर्देशेन पात्रको जानाति यदिदं राज्ञ: स्वप्नवचनम्।

नाट्यनिर्देशानुसारिकार्यस्योक्ति: - विक्रमोर्वशीये एतादृशो नाट्यनिर्देशो वर्तते प्रथमाङ्के। तथा हि उर्वशी साभिलाषं पश्यति इति नाट्यनिर्देशस्य व्याख्यारूपोऽपि दृश्यते चित्रलेखा - सखि किं प्रेक्षसे।

उर्वशी - ननु समदु:खगत: पीयते लोचनाभ्याम्। नाट्यनिर्देशेन सूचितं कार्यं क्वचित् तदव्याख्यार्थपात्रवाक्येनानुस्रियते तद्यथा राक्षस: - 'खड्गमाकृष्य' नन्वनेन व्यवसायसुहृदा निस्त्रिंशेन। तत्र खड्गाकर्षणं नाट्यनिर्देशेन सूचितम्। तदेव परतो व्याख्यातम्।

भाषणाक्षेपसूचना - अभिज्ञानशाकुन्तलस्य प्रथमाङ्के अनसूया वदति सखी वसन्तोदार रमणीये समये तस्या उन्मादयितुं रूपं प्रेक्ष्य 'इत्यर्धोक्ते लज्जया विरमति' इति नाट्यनिर्देशेन भाषणाक्षेप सूच्यते। सप्तमेऽङ्के शकुन्तला अयत्नार्यपुत्र 'अर्धोक्ते बाष्पकण्ठी विरमति' इति निर्देश:। प्रतिमानाटकस्य द्वितीयेऽङ्के कौसल्या वदति महाराज वत्स लक्ष्मण: 'इत्यर्धोक्ते' इति नाट्यनिर्देशेन कौसल्यावचसि आक्षेप: सूचित:।

दृश्यकार्याणां निर्देश: - अभिषेकनाटकस्य प्रथमेऽङ्के बहूनि कार्याणि एकेनैव नाट्यनिर्देशेन प्रकाश्यन्ते तद्यथा वाली - 'मोहमुपगम्य पुन: समाश्वस्य शरे नामाक्षराणि वाचयित्वा रामसुद्दिश्य' इति नाट्यनिर्देशेनाभिनीतानि वालिना बहूनि कार्याणि प्रेक्षका: पश्यन्ति।

श्रव्यदृश्यविधाने क्वचिद्व्याख्यानन्तरं वाचकत्वमपि। 'अवतरति' इति नाट्यनिर्देशेन नायकस्य दृश्यव्यापार: सूचित: प्रेक्षकैर्दृश्यते। अपरञ्च प्रतिमानाटके लक्ष्मण - एह्येहि वत्स। दीर्घायुर्भव। परिष्वजस्व गाढम्। 'आलिङ्गति' इत्यत्रालिङ्गतीति दृश्यकार्यं नाट्यनिर्देशेन सूचितम्।

अविमारके तृतीयेऽङ्के नायकस्य केवलं दृश्यं कार्यमप्यनेकविधेन नाट्यनिर्देशेन प्रकटितम् - हस्तेन तस्या हस्तं गृहीत्वा तिष्ठति। पञ्चरात्रेऽपि शकुनि - 'गृहीत्वानुनाय्य च' अर्जुनस्य (इति क्षिपति। द्रोणस्य पादयो: पतति) ऊरुभङ्गे 'उभे निपुण्ड्र कुरुत:' इति नाट्यनिर्देश:।

मृच्छकटिकस्य प्रथमाङ्के नाट्यनिर्देशेन दृश्यं कार्यं विद्यते। पटान्तेन (दीपं) निर्वाप्य (वसन्तसेना) प्रविष्टा द्वितीयेऽङ्के द्यूतकरो माथुरश्च संवाहकं ताडयत इति उभौ बहुविधं ताडयत:' इति नाट्यनिर्देशेन संज्ञापितम्। तदनु द्वि: माथुर: कथयतीति नाट्यनिर्देश:। दृश्यकार्याणां नाट्यनिर्देशेन निदर्शनं मृच्छकटिकेऽप्यनेकविधं सम्पद्यते। माथुर: संवाहकमाकृष्य घोणायां मुष्टिप्रहारं ददाति, संवाहक: सशोणितं मूर्छां नाटयन् भूमौ पतति, दर्दुरक उपसृत्यान्तरयति माथुरो दर्दुरकं ताडयति। दर्दुरको विपरीतं ताडयति। दर्दुरको माथुरस्य पांशुना चक्षुषी पूरयित्वा संवाहकस्यापक्रमितुं संज्ञां ददाति। माथुरोऽक्षिणी निगृह्य भूमौ पतति। संवाहको अपक्रामति। पञ्चमेऽङ्के वसन्तसेना शृङ्गारभावं नाटयन्ती चारुदत्तमालिङ्गति। चारुदत्त: स्पर्शं नाटयन् प्रत्यालिङ्ग्य' इति नाट्यनिर्देशो कार्यद्योतको। षष्ठेऽङ्के नाट्यनिर्देशो वर्तते चन्दनको नाट्येन प्रवहणमारुह्यावलोकयति। तदनन्तरमपरो नाट्यनिर्देशो वर्तते चेटस्तथा करोति। वीरक: प्रवहणमारोढुमिच्छति। चन्दनक: सहसा केशेषु गृहीत्वा पातयति पादेन ताडयति च।

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal
Issue-40, Vol-10, Oct to Dec. 2021

Editor
Dr Bapu G. Gholap

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Oct. To Dec.2021
Issue 40, Vol-10

Date of Publication
01 Dec. 2021

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मताशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र बीड

"Printed by Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt Ltd ,At Post Limbaganesh Dist.Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat

Reg No U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At Post Limbaganesh,Tq Dist Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal

Oct. To Dec. 2021
Issue-40, Vol-10

27) नाट्यशास्त्र में आंगिक सात्विक अभिनय || 119
डॉ. अरविन्द कुमार, नई दिल्ली

28) विकास और पर्यावरण || 123
चन्दू राम

29) ऋग्वेद में विश्व विधान || 125
डॉ० विहारिका चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

30) शिक्षा एवं प्रशिक्षु शिक्षकों के शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन बांदा || 128
डॉ० ओमकार चौरसिया, बाँदा

31) भारत में स्थानीय शासन और जनस्वास्थ्य सेवाओं का आकलन || 134
देवेन्द्र सिंह गोमावत, जयपुर

32) ग्वालियर नगर में किफायती आवास योजना : एक अध्ययन (प्रधानमंत्री आवास || 138
वीर सिंह तोमर & प्रो. एस.के. शुक्ला, ग्वालियर (म.प्र.)

33) ममता कालिया के उपन्यासों में नौकरीपेशा नारी की समस्या : एक दृष्टिकोण || 141
डॉ.संजय सिताराम गायकवाड, औरंगाबाद(महाराष्ट्र)

34) छात्रों के भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि प्रभाव || 144
इम्तेयाज आलम & डॉ० नवीन रंजन रवि, मधुबनी (बिहार)

35) पूर्व-मध्यकालीन शिक्षा के विषय एवं शैक्षणिक संस्कार || 146
महीप कुमार मीना, जयपुर

36) महिलाओं और बच्चों में कुपोषण || 152
प्रो.महालक्ष्मी जौहरी & मिथलेशकुमारी, करैरा–शिवपुरी (म.प्र.)

37) उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की मूल्यपरक शिक्षा का तुलनात्मक || 155
नीलू सिंह & डॉ. सुनीता भदौरिया, ग्वालियर (म.प्र.)

38) सामाजिक परिवर्तन के घटक के रूप में शिक्षा की भूमिका का एक अध्ययन || 158
डॉ० नीरज कुमार & डॉ० अनिल कुमार, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

39) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की दशा और दिशा || 162
डॉ.माया पारस, जिला– अनूपपुर (मध्य प्रदेश)

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

सरकार की भूमिका में कमी हो रही है। भूमण्डलीकरण के प्रभाव से सार्वजनिक क्षेत्र में किये जाने वाले बहुत से कार्य निजी क्षेत्र को सौंपे जा रहे हैं। कल्याणकारी एवं लाइसेंस राज के अन्त की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई है। पहले राज्य या सरकार सबसे बड़े नियोक्ता की भूमिका में थे परन्तु अब ऐसी सेवाओं का कार्य निजी क्षेत्र को दिया जा रहा है जो इस समय सरकार द्वारा की जा रही है। अब सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के विनिवेश की नीति अपनाई जा रही है। भूमण्डलीकरण के प्रभाव से प्रशासनिक सुधार के लिए प्रयास हो रहे हैं अब लोक प्रशासन में पारदर्शिता, गुणवत्ता, जवाबदेहिता, नागरिक चार्टर, ई– गवर्नेंस जैसी बातें देखने को मिल रही हैं।

इस प्रकार भूमण्डलीकरण का लोक प्रशासन के विविध आयामों पर प्रभाव पड़ा है।

सन्दर्भ

(१) वैश्वीकरण (Globalisation) पुस्तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, सिद्धान्त और व्यवहार लेखक यू.आर. घई पृष्ठ संख्या –८७, न्यू एकेडेमिक पब्लिशिंग कम्पनी माई होरां गेट जालन्धर

(२) भूमण्डलीकरण पुस्तक लोक प्रशासन लेखिका इन्द्रजीत कौर पृष्ठ संख्या ६८३ एस बी पी डी पब्लिशिंग हाउस

(3) उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के युग में लोक प्रशासनकी बदलती प्रवृत्ति, राजनीति विज्ञान प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, साहित्य भवन प्रकाशन पृष्ठ संख्या–५९२

(४) उपर्युक्त सन्दर्भ

(५) भूमण्डलीकरण पुस्तक लोक प्रशासन लेखिका इन्द्रजीत कौर पृष्ठ संख्या–६८५

(६) वैश्वीकरण का राज्य एवं भारतीय लोक प्रशासन पर प्रभाव उमेश कुमार https./www.iipa.org.in public (PDF)

□□□

27

नाट्यशास्त्र में शरीर संबंधी अभिनय

डॉ अरविन्द कुमार
सहायक आचार्य, साहित्य विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत
विश्वविद्यालय नई दिल्ली

आचार्य भरत ने गला, पेट, ऊरु और जङ्घा की गणना प्रत्यंग के अन्तर्गत की है। गला सुन्दर, तिर्यक् नतरन तथा परिवर्तन का माध्यम है। पेट से आना, संकुचित, स्थूल आदि क्रियायें प्रकट होती हैं। पेट, प्रसार, विस्तार, आकुंचन, प्रसारण आदि क्रियाओं का माध्यम है। जङ्घावर्तितकम्पन, शाखनादि क्रियाओं को प्रकट करता है। इस प्रकार अर्थ के प्रकाशन में प्रत्येक प्रत्यंग पृथक्–पृथक् महत्त्व है। अभिनय की दृष्टि से भरत ने गला के नौ, पेट के तीन, ऊरु के, जङ्घा के पाँच पाँच भेद बताए हैं। ऊरु जङ्घा और पाद अभिनय में परस्पर सम्बद्ध होते हैं।

गला का अभिनय

गला सिर का आधार है। कुछ आचार्यों ने इसकी गणना प्रत्यंग के अन्तर्गत की है। सिर के सभी अभिनय गला पर आधारित हैं, गला के सभी कर्म सिर के कर्मों का अनुसरण करते हैं तथा सिर के कर्म गला के अभिनय से ही प्रकाशित होते हैं। भरत ने अभिनय की दृष्टि से गला के नौ भेदों का निरूपण किया है — रेचिता, उन्नता, समा, वलिता, कुञ्चिता, नता, निवृत्ता, त्र्यस्रा, अञ्चिता, भरत के अनुसार गला के अनेक भेद लोक के भाव के आधार पर हो सकते हैं। भरत निरूपित नौ भेदों के स्वरूप और विनियोग को बालरामभरतम् संगीतरत्नाकर, नाट्यदर्पण, और अभिनयप्रकाशिका में स्वीकार हुआ है।

रेचिता

घूमती हुई तथा हिलती हुई गला रेचिता

I2OR Impact Factor : 3.015

ISSN : 2395 - 5104

शब्दार्णव Shabdarnav

International Peer Reviewed Referred Journal of Multidisciplinary Research

Year 7 Vol. 13, Part-II January-June, 2021

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI

Executive Editors
DR. KUMAR MRITUNJAY RAKESH
MR. RAGHWENDRA PANDEY

Published by
SAMNVAY FOUNDATION
Mujaffarpur, Bihar

♦	चिन्तायाः शैक्षिकोपलब्धौ आगमनप्रभावस्य अध्ययनम् *आशीषकुमारपाठक*	137–139
♦	श्रीमद्भगवद्गीतायां शान्तिशिक्षातत्त्वानि *अशोकमण्डल*	140–143
♦	संस्कृतचम्पूकाव्यपरम्परायामनिरुद्धचम्पूकाव्यस्य स्थानम् *आशीषकुमारशुक्ल*	144–147
♦	अष्टाध्यायी कम्प्यूटर अनुप्रयोग और सम्भावनाएँ *बलदेवराम खन्दोलिया*	148–151
♦	सांख्ययोगयोः साम्यम् *दीमान सिकदार*	152–154
♦	संस्कृतनाटकेषु पात्राणां समीक्षणम् *डॉ० अवनीन्द्रकुमार*	155–158
♦	आपस्तम्बधर्मसूत्रोक्तदिशा पञ्चमहायज्ञविचार *डॉ० मनोजकुमारसाहू*	159–162
♦	राहुल सांकृत्यायन के संदर्भ में मधुरेश का चिंतन *डॉ० नितिन सेठी*	163–169
♦	स्मृतियों में राजधर्म के मूल तत्त्व *डॉ० प्रियंका तिवारी*	170–175
♦	दार्शनिक चिन्तन में मानव चेतना *डॉ० पूजा*	176–178
♦	कबीर का अद्वैतवाद निरूपण *डॉ० पूनम*	179–181
♦	समाज के युग द्रष्टा महामना पंडित मदन मोहन मालवीय (कृतेषु प्रतिकर्तव्यं एष धर्मः सनातनः – वाल्मीकि) *डॉ० राणा प्रताप सिंह*	182–185
♦	बौद्ध मत में निर्वाण की अवधारणा *डॉ० सुधीर कुमार सिंह*	186–189
♦	अनिद्रा रोग का यौगिक प्रबन्धन *डॉ० सुरजीत घोषाल*	190–193
♦	दर्शनमूल वेदा *गंगा रानी साहू*	194–198
♦	नाट्यसाहित्यरचनापरम्पराविमर्श *गुरुप्रसाद*	199–202
♦	मेरी और हिन्दी की यात्रा (हिन्दी से सम्बन्धित अफगानिस्तान में) *जबीहुल्लाह सिद्दिकी*	203–207
♦	नाट्यशास्त्रस्य ऐतिह्यम् *कौशिकपाल*	208–212
♦	कश्मीर भक्ति परम्परा व स्तोत्र साहित्य *मनोज कुमार*	213–217

संस्कृतनाटकेषु पात्राणां समीक्षणम्

डॉ० अरविन्दकुमारः*

दूती-चेटी कश्चिद् दूतीकार्येण महत्त्वम् आप्नोति।[1] सा तु पीठमर्दिका भवितुमर्हति। विविधोपायैः सा नायिकां नायकप्रणयसरणौ प्रवर्तयति उत्साहयति च। मालविकाग्निमित्रे राज्ञा दूत्याः कार्यविशेषः सम्यक् परिभाषितः। तद्यथा -

भावज्ञानानन्तरं प्रस्तुतेन प्रत्याख्याते दत्तकुतूहलेन।
नायकेनेयं स्थापिता स्वे निदेशे स्थाने प्राणाः कामिनां दूत्यधीनाः।[2]

भरतानुसारेण नायकः कामार्तः आत्मावस्थां प्रदर्शयितुं दूतीं नायिकां प्रति प्रेषयति।[3] नायिकाया दूत्योऽपि मार्गे सुविदिताः। मालविकाग्निमित्रे सा नायकस्य सन्देशं नायिकायै ददाति। दूत्या कार्यैक्यं मालविकाग्निमित्रे विलसति। तद्यथा -

बकुलावलिका (मालविकां प्रति) अरुणशतपत्रमिव शोभते ते चरणम्। सर्वथा भर्तुरङ्कपरिवर्तिनी भव। सुखे, भयं सम्प्रति भविष्यतीति भयसन्तापकारणं किं न नूतनमतोऽवलम्बितव्यः। विमर्दसुरभिर्बकुलावलिका खल्वहम्। नायकयोः प्रथमसमागमस्याभिसारस्थानं दूत्या निर्धारितं प्रति भाति। सा स्थली -

उत्सवे प्रतिसञ्चारे उद्याने मित्रवेश्मनि। धात्रीगृहेषु सख्या वा तथा चैव निमन्त्रणे।।
व्याधितव्यपदेशेन शून्यागारे निवेशने। कार्यः समागमो नृणां स्त्रीभिः प्रथमसंगमे।।[4]

दूती नायकयोः साम्मुख्यं विधाय तयोः सांगतिकमाचार-विचारविशेषं प्रकटयितुकामा स्वयमेव मालविकाग्निमित्रे सव्यपदेशं दूरं गत्वापि तयोरेकान्तं निवारयति। तयोर्निर्बाधिकं रहः प्रणयं प्रतिपादयितुं सा विदूषकं नियोजयति - आर्य गौतम अहमपवारिका तिष्ठामि। त्वं द्वाररक्षको भव।[5] मालतीमाधवे दूती प्रणयपक्षे सन्तप्ताया नायिकाया विनोदस्थानमपि भवति। तत्र सह नायिका प्रणयिनमधिकृत्य किञ्चिद्रमणीयं चर्चति मालतीमाधवे। ततः गर्भं नायिकाया परिष्वङ्गमर्हति स्थानान्तरेऽप्यत्र।

चेट - चेटस्तु मृच्छकटिके शकारस्य वेश्याग्रहणे सहायः सहायः।[6] तामनुनयति। चारुदत्तस्य चेटः तस्य विदूषकस्य च पादं प्रक्षालयति स्वहस्ताभ्याम्।[7] वसन्तसेनाया भृत्यश्चेटः कश्चित् प्रवहणवाहकोऽभवत्।[8] कश्चिदन्यश्चेटो द्वारपाल एव चारुदत्तस्य सकाशादागतस्य ब्राह्मणस्य सूचनां वसन्तसेनायै निवेदयति। स द्वारं शीघ्रं उद्घाटयति।[9] वसन्तसेनाया अपरश्चेटस्तु पुरोगामितया उद्दामस्वभावतया च प्रेष्योऽपि स्वात्मवृत्तिकः प्रतिभाति राजप्रासादस्थानिमे भागे। स प्रश्नोत्तरद्वारेण वसन्तसेनां मोदयति। स यदीनापि स्वागतं वदति। स खलु सामाजिकी प्रतिष्ठा चेटादीनां प्रतिभाति। ननु विदूषकस्य चेटविषयकसम्बोधनेन स्पष्टमेव।[10] शकारस्य चेटः स्वामिन आज्ञां तिरस्कृत्य वसन्तसेनां मारयितुं नोद्यतः। स परलोकाद् बिभेति। शकारश्चेटेन ताड्यते। चेटश्शकारं निन्दति वसन्तसेनाया हत्याप्रसङ्गे - महदकार्यं कृतमिति। चेटस्य विश्वसनीयता तु निःसन्दिग्धा विद्यते एव। चारुदत्तस्य गृहे निक्षिप्तं स्वर्णभाण्डं तेन दिवा रक्ष्यते। न खलु चेटो वञ्चकः। शकारस्य चेटः कथयति स्वामिविषये मृच्छकटिकस्य दशमेऽङ्के - अनार्य वसन्तसेनां मारयित्वा न परितुष्टोऽसि। साम्प्रतं प्रणयिजनकल्पपादपमार्यचारुदत्तं मारयितुं व्यवसितोऽसि।

शकारः - शकारस्तु नीचजातीयो नगररक्षाधिकारी अस्ति। विश्वनाथानुसारेण स राज्ञोऽनूढाया स्त्रियः भ्राता।[11] मृच्छकटिके शूद्रकानुसारेण शकारः कुलपुत्रः, राजश्यालः, संस्थानकः, उत्फुल्लकनलकः, कृतज्ञदोषभाण्डः, बहुसुवर्णमण्डित-कर्पटकः, कुट्टिनीपुत्र आसीदित्यनेन तस्य कार्यव्रातमनुमातुं शक्यते। न किमप्यकार्यं तस्याकरणीयं प्रतिभाति। मृच्छकटिकानुसारेण शकारो कपटनिर्णीतेऽप्यवाद्यः प्रत्यक्षदर्शितरभियोगेषु परं निस्सातो महानुभावानां विपत्तिकोश एव स्खलिताचारः प्रतिभाति। कालिदासानुसारेण श्यालस्तु क्वचिद्विमर्शप्रतिपन्नोऽपि भवति। अभिज्ञानशाकुन्तले स राज्ञोऽङ्गुलीयकं ददाति। तदा राज्ञो भावानुभावान् विमृश्य स निवेदयति 'न तस्मिन्

*सहाचार्यः (साहित्यविभाग), श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, (मानितविश्वविद्यालयः) कटवारियासराय, नई दिल्ली-110016

मतार्हं[1] स्वं भर्तुर्वंशमलंकरोति तर्कयति। तस्य दर्शनेन भर्तृविषयको जनः स्मारितः। [illegible] प्रकृतिवत्सलोऽपि [illegible] आसीत्। शकारः नागरकी [illegible] विचरति। मृच्छकटिकस्य प्रथमाङ्के शकारस्य [illegible] तत्र [illegible] विदूषकस्य निन्दितः।[11] [illegible] वसन्तसेना [illegible] सः। शकारमुखात् प्रायशः पद्येषु [illegible] सापवादमयान्यं च [illegible] निर्गच्छति। तद्यथा वसन्तसेनां प्रति

चाणक्येन यथा सीता मारिता भारते युगे एवं त्वां मोटयिष्यामि जटायुरिव द्रौपदीम्॥[12]

स्वामि [illegible] [illegible] पुष्पकरण्डकजीर्णोद्याने [illegible] गमयति।[13] कुटिलबुद्धिदुर्विनीतोऽपि स [illegible] प्रमाणीकृत् [illegible]। [illegible] न [illegible]। अपरं मूर्खतायाः [illegible] प्रकाशयति न तत्र। अनेन प्रकारेण स्वभावतः [illegible] [illegible] शकारः हास्यानुकरणे सङ्कलयति। आत्मप्रशंसकः स बहुशः विकत्थते।[14] स मृषावादकत्वात् [illegible] अन्यमपि वदति – एषा (वसन्तसेना) मया मारिता। कपटाचारः शकारः वदति **चारुदत्तविनाशाय करोमि कपटं नवम्।**[15]

कञ्चुकी प्रायशोऽन्तःपुरचारी कञ्चुकी बहुविधकार्याणां सम्पादकः शिष्टाचारं निर्दिशति राजपुत्रम् अन्तःपुरेषु [illegible] तद्यथा – [illegible] इति ब्रूते।[16] [illegible] भवान् नृपात्मजं न [illegible] राजकुलस्य मर्यादायाः धर्मपरिपालनं व्यवस्थापयति धर्माचरणं किं दुष्करमिति राजकन्यानां [illegible] वा कञ्चुकिमुखेन राजदारिकाणां [illegible] व्यज्यते।[17] न केवलं राजभार्यायामपि तत्कन्यायामपि राजकुलकर्तुर्भर्तुः [illegible]। [illegible] वाल्मीकिरामायणे कौसल्यया सह पृष्ठिनामकः कञ्चुकीशोऽतिथिसत्कारस्य [illegible] विभर्ति। राजकीयसन्देशं तस्य सम्बन्धिषु [illegible] स्वप्ने षष्ठेऽङ्के। तत्रैव स राजानं [illegible] वा कः [illegible] [illegible] मन्दुकाल इत्यादि[18] राजकुमार्याः विवाहस्य विषयेऽपि तस्य मतं विज्ञातमभवत्। महत्त्वपूर्णघटनायाः निवेदयिता क्वचित् कञ्चुकी भवति। स प्रतिज्ञायौगन्धरायणे राजानं सूचयति [illegible] [illegible]। स राजा [illegible] भवति। स राजप्रासादस्य महत्त्वपूर्णद्वारस्य रक्षकोऽपि भवति प्रतिज्ञायौगन्धरायणस्य द्वितीयेऽङ्के वेणीसंहारस्य षष्ठाङ्के च। स राजानं विज्ञापयति [illegible] प्रवेशम्। स प्रश्नानुसारेण वासवदत्तायाः कन्यायाः कृतमन्तं राज्ञे निवेदयति। उत्तमान्यतिथये कथं सत्कारो विधेय इति कञ्चुकिनो भार आसीत्। वेणीसंहारे कञ्चुकी दुर्योधनस्य [illegible] भग्न इति सूचयति। राज्ञा [illegible] प्रतिनिधिभूय स यौगन्धरायणाय भृङ्गारमर्पयति। प्रतिमानाटकस्य प्रथमाङ्कस्य विष्कम्भके काञ्चुकीयोऽभिषेकादीनां धार्मिकविधिना सम्भारान् समगृह्णात्। कञ्चुकिनः समीपादृष्टिपात [illegible] प्रतीष्टा। स रामस्याभिषेकप्रस्तावमनुमोदते

इदानीं भूमिपालेन कृतकृत्याः कृताः प्रजाः राघाभिधानं मेदिन्यां शशाङ्कमपि [illegible]॥[19]

विदूषकः विदूषकोऽसत्यमान्यमिति। आत्मा कश्चिद् ब्राह्मणस्य दासीपुत्रो सम्मानितोऽपि जनः शृङ्गाररसप्रधानस्य नायकस्य दक्षिणत्वमनस्कस्य कृते प्राणानपि व्ययन्नुद्यतो विषमाम् स्थितिम् अनन्यसाधारणप्रतिभया कार्यं साधयति।[20] स तु नायकस्यापरं प्राणा इव सखा नाटकेषु महत्त्वं भजते। उत्कृष्टतमेषु हीनतमेषु वा कार्येषु [illegible] एव विदूषको नायकस्य दक्षिणहस्त एव। स राज्ञः कार्याकार्यविचारणायां भागी भवति। मृगयां प्रति स राजानं विश्वस्तसहचर्यमभिज्ञानशाकुन्तले राज्ञो मनोरञ्जनस्य चिन्ता-निवारणस्य च स [illegible] करोति। कुत्र राजा तिष्ठतु [illegible] विधानं कल्पयति सः।[21] पण्डितोऽप्यात्मसौख्यप्रदर्शनेऽपि हास्यमुत्पादयति बहुशोऽप्यल्पज्ञ इव तोरणमाला सर्वा इति सूचयित्वा नायकस्य वासवदत्ता संस्करणवियोगजनितां चिन्तामपहरति। तत्रैव राज्ञः शयनाय कथां कथयति स्वाज्ञानप्रदर्शिका चतुर्थेऽङ्के।[22] विदूषकस्य प्रतिभा उत्कर्षस्तस्य प्रकरणानि प्रतिफलति। नायक उपरतामपि वासवदत्तां पश्यतीति भ्रान्त्या एतस्मिन्नगरेऽवन्ति सुन्दरीनाम यक्षी प्रतिवसतीति तस्य प्रतिवचनेनाद्भुतम्। नायकस्य शृङ्गारस्यानुरागस्य सम्यग् जानाति सः। वाक्यमात्रकेष्वपि नाटकेषु विदूषकः प्रतिफलति

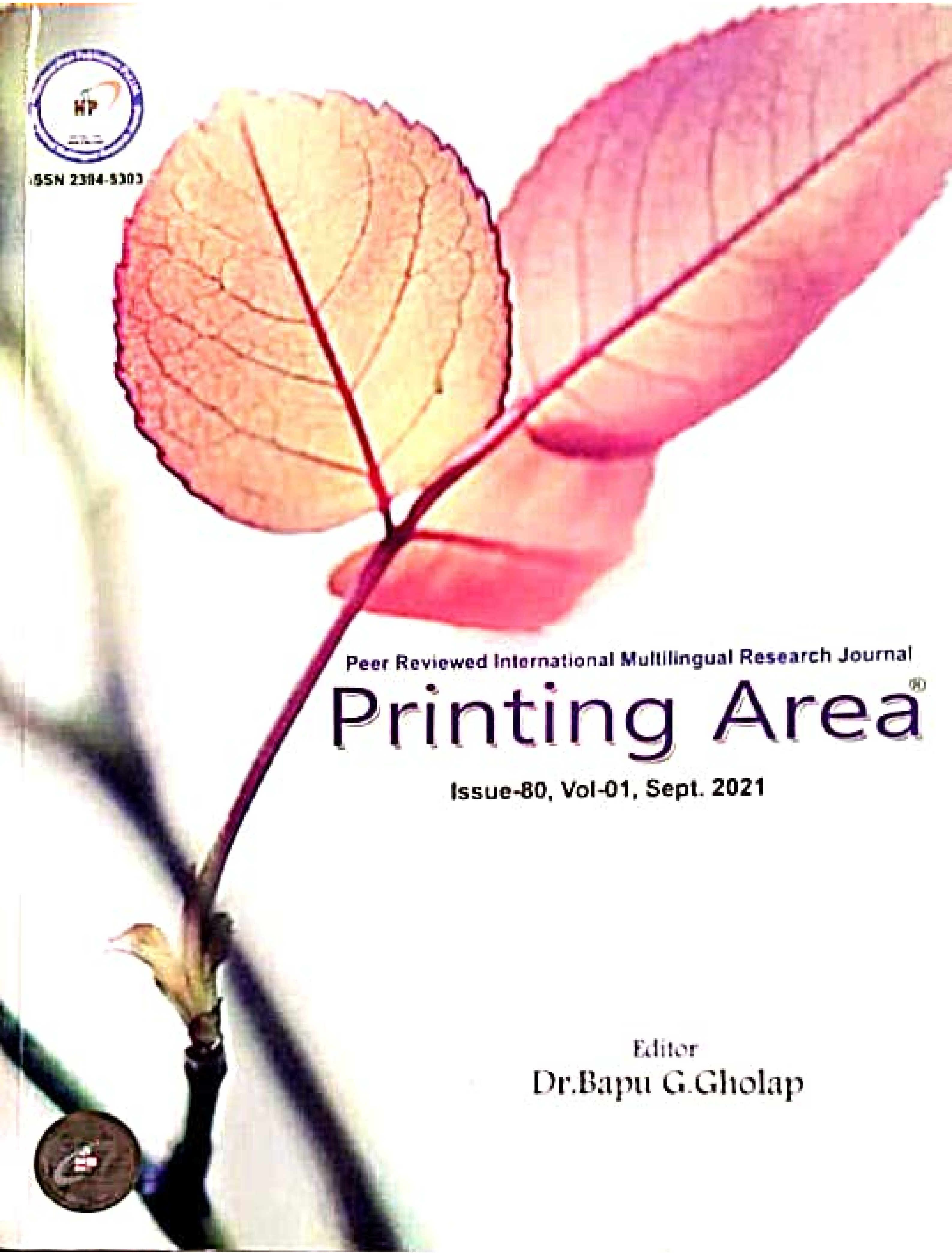

ISSN 2394-5303

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal

Printing Area®

Issue-80, Vol-01, Sept. 2021

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

September 2021, Issue-80, Vol-01

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. At Post Limbaganesh Dist.Beed 431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat

Reg No U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At Post Limbaganesh Tq Dist Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell 07588057695 09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

26) विश्व में भारत और छत्तीसगढ़ विशेष संदर्भ में "भूमि उपयोग में नये प्रयोग
डॉ. हेमलता पटेल & सुलोचन मिराह ||109

27) नीरज मुखर्जी विवेचन और अनुभूति
डॉ. रेखा अरोड़ा ||111

28) महाकविमाघ विरचित शिशुपालवध विमर्श
डॉ. अरविन्द कुमार, नई दिल्ली ||115

29) नारी विमर्श के विविध आयाम एवं मृदुला गर्ग का कथा साहित्य
अशोक कान्ति, पटना ||117

30) निमाड़ी लोक कथाओं में धार्मिक भावना
डॉ. कुंवरसिंह बघेल & ज्योति वर्मा, बड़वानी (म.प्र.) ||121

31) शास्त्रीय संगीत में मल्हार का योगदान
Neelakshi Tuli, Jammu ||124

32) उत्तराखण्ड विधान सभा चुनाव में दलीय स्थिति का अवलोकनात्मक अध्ययन
डॉ० जगमोहन सिंह नेगी, गोपेश्वर (चमोली) ||126

33) बिहार के प्रथम महिला मंत्रिमण्डल द्वारा किये गये कार्य
नेहा कुमारी, बोधगया ||135

34) भारत वर्ष में आयुष उत्पादों के अन्तर्गत पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड की उत्पाद स्थिति
खुशबू पैगवार & डॉ संजय जैन, भोपाल(म.प्र.) ||142

35) भक्ति कालीन संत जाम्भोजी के साहित्य में जीवन मूल्य
डॉ. मोहनराज परमार, बाड़मेर ||147

36) कार्यस्थल पर उत्पीड़न, उसके दुष्प्रभाव और सुरक्षा उपायों का अध्ययन
प्रा.डॉ. ए.बी.पटले, नागपुर ||150

37) बागपत जनपद में प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण में शिक्षा के अधिकार ...
डॉ० नवीनता रानी, मोदीनगर ||155

38) 'फाँस' उपन्यास में चित्रित किसान
डॉ. गुलाब राठोड, विजयपुर ||162

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area Peer-Reviewed International Journal | September 2021 Issue-80, Vol-01 | 0115

28

महाकवि माघ विरचित शिशुपालवध विमर्श

डॉ. अरविन्द कुमार
सहाचार्य (साहित्य विभाग),
श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
कटवारिया सराय, नई दिल्ली

महाकवि माघ राजस्थान के भीनमाल नगर में उत्पन्न हुए थे। वे कलापक्ष के काव्यसर्जन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते है। यद्यपि इनके कलापक्ष का काव्यकार मानने वाले विद्वानों की अधिक रुचि रही है किन्तु ये कलापक्ष के साथ भावपक्ष में भी उतने ही सिद्धहस्त थे। महाकवि माघ की विरचित एकमात्र कृति शिशुपालवध है। यह 20 सर्गों में विरचित महाकाव्य है, जिसमे शिशुपाल के वध की कथा वर्णित है। इस महाकाव्य का कथानक का आधार महाभारत की कथा है। महाभारत के सभापर्व के अन्तर्गत में उल्लिखित तथा श्रीमद्भागवत पुराण के चौदह अध्याय में वर्णित कथा के आधार पर माघ ने अपने महाकाव्य की रचना की है।

माघ द्वारा वर्णित मेरे पितामह सुप्रभदेव वर्मलात नामक राजा के मन्त्री थे और पिता दत्तक सर्वाश्रय थे माघ के समय निर्धारण में बहुत मतभेद वर्णित है कोई उनका सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में और कोई आठवीं शताब्दी के मध्य में स्वीकार करता है। माघ के समय के बारे में बहु प्रमाणों के आधार पर पहला समय अधिक समीचीन मालूम पड़ता है। सोमदेव ने अपने यशस्तिलकचम्पू (950 ई.) में माघ का वर्णन करते है। आचार्य आनन्दवर्धन ने अपने ध्वन्यालोक में (850 ई.) का उल्लेख करते है। शिशुपालवध के दो श्लोकों (3/53, 5/26) का उदाहरण रूप में दर्शाया गया है। माघ का समय निर्धारित करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण अन्तरंग प्रमाण मिलता है। शिशुपालवध के द्वितीय सर्ग के श्लोक में श्लेष के द्वारा राजनीति की समता शब्द विद्या व्याकरणशास्त्र से की गयी है-

अनुत्सूत्रपदन्यासा सद्वृत्तिः सन्निबन्धना।
शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा॥

इस श्लोक में जो व्याकरण ग्रन्थ काशिकावृत्ति और न्यास की तरफ संकेत करता है। वल्लभदेव और मल्लिनाथ जैसे टीकाकारों द्वारा उल्लेख है। वामन और जयादित्य 650 ई. में काशिकावृत्ति की रचना की। इसलिए यह निर्धारित है कि इस समय के बाद ही माघ होंगे। इस श्लोक में न्यास शब्द से किस ग्रन्थविशेष की तरफ संकेत है इसके बारे में विद्वानों का मतभेद है। पाठक महोदय के अनुसार न्यास से अभिप्राय काशिकावृत्ति की जिनेन्द्रबुद्धि रचित 'न्यास' नामक टीका से है जिसकी रचना लगभग 700 ई. में हुई। अतः माघ का समय इस आधार पर 750 ई. के पास आसपास उचित नहीं प्रतीत होता है माघ ने जिनेन्द्रबुद्धि के ही न्यास ग्रन्थ की ओर संकेत किया हो। न्यास नामक ग्रन्थों की रचना जिनेन्द्रबुद्धि के पहले भी हो गयी थी। माघ का समय 625 ई. के एक शिलालेख के आधार पर लगभग 100 वर्ष पूर्व का सिद्ध होता है। वर्मलात नामक राजा का यह शिलालेख है। माघ के पितामह सुप्रभदेव के आश्रयदाता थे। अतः सुप्रभदेव का समय 625 ई. के आसपास का था। 650-700 ई. तक उनके पौत्र माघ का समय रहा सिद्ध होगा। राष्ट्रकूट के राजा नृपतुंग (814 ई.) ने अपने कन्नड़ी भाषा के ग्रन्थ 'कविराज मार्ग' में माघ को कालिदास का समकक्ष सिद्ध होता है। इससे प्रतीत होता है कि नृपतुंग के काल में अर्थात् नवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में माघ ने साहित्य संसार में प्रतिष्ठित पद प्राप्त कर लिया था। अतः यह निश्चित होता है कि माघ का आविर्भाव काल 800 ई. अनन्तर का नहीं हो सकता।

बाण महोदय के अनुसार बाण ने अपने हर्षचरित नामक ग्रन्थ में 620 ई. में न्यास का वर्णन किया। 'कृतगुरुपदन्यासा लोक इव व्याकरणेऽपि' सम्भावित है कि बाण के समान माघ ने भी इसी न्यास की ओर संकेत किया हो न कि जिनेन्द्रबुद्धि 700 ई. के पीछे नहीं माना जा सकता है और सम्भवतः वह सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ही हुए थे। माघ के महाकाव्य की गणना बृहत्त्रयी में होती है। शिशुपालवध को छोड़कर माघ की किसी अन्य रचना का अभी तक पता नहीं है। 20 सर्गों के 1650 श्लोक हैं। प्रत्येक सर्ग में ओजोगुणमयी कविता